आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 12 अगस्त, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

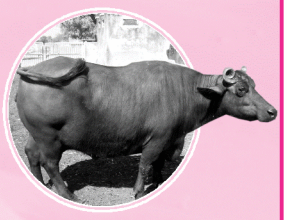

कुलपति सन्देश

राज्य के समृद्ध पशुधन की बेहतरी का संकल्प लें

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों!

राम राम सा। देश के 71 वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आजादी के सात दशकों के सफर में हमने कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। देश के कृषि और पशुपालन क्षेत्र में भी सकारात्मक सोच के साथ देश ने ऊंची उड़ान भरी है। बढ़ती जनसंख्या, प्रतिकूल जलवायु परिवर्तन, भू–जल का गिरता स्तर जैसी चुनौतियों से निपटना अब हमारी प्राथमिकता में शामिल हो गया है। राज्य में स्वस्थ पशुधन और अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिकों, किसानों और पशुपालकों को मिलकर प्रयास करने होंगे। राज्य कृषि में फसल की बुवाई से लेकर कटाई तक की प्रक्रिया बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे प्राप्त होने वाले उप–उत्पाद पशुधन का प्रमुख आहार बनते हैं। राज्य में मानसून आधारित खेती की असफलता पर राज्य में पशुओं के लिए चारे और आहार का संकट उत्पन्न होता है। इसके साथ–साथ सूखे और अकाल की मार भी पशुधन को झेलनी पड़ती है। इन सभी चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा विकसित पशु चारा और आहार की संरक्षण विधियां, नहर किनारे वृक्षारोपण, चारागाह विकास कार्यक्रम और सिंचित क्षेत्रों में चारा उत्पादन फसलों की बुवाई का कार्य प्रमुखता से करना होगा। राज्य का पशुपालन ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार देने वाले उद्यमों में प्रथम स्थान पर है, जिसमें लागत खर्च न्यूनतम है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्नता लाने के लिए पशुपालन का विकास ही सबसे अच्छा उपाय है। राजस्थान ने अपने उन्नत पशुधन से एक अलग पहचान कायम की है। पशुपालन से सालान 150 हजार करोड़ रूपये से अधिक की आय होती है। देश के करीब 51.21 करोड़ पशुधन में से हमारे राज्य राजस्थान में करीब 5.78 करोड़ पशुधन मौजूद है। वर्ष 2007 में की गई 18वीं पशुगणना में राजस्थान का स्थान तीसरा था, जब यहां देश का 10.75 प्रतिशत पशुधन उपलब्ध था परन्तु अब यह प्रदेश 11.27 प्रतिशत पशु संख्या के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। देश भर में ऊँटों और बकरियों की संख्या के लिहाज से राजस्थान का स्थान देश में सिरमौर बना हुआ है। वर्ष 2012 पशु गणना के अनुसार देश भर में राजस्थान का स्थान भैंस वंश में दूसरा, भेड़ वंश में तीसरा और अश्व वंश में चौथा स्थान आंका गया है, लेकिन पशुधन उत्पादन में अपेक्षित सुधार की गुंजाइश है। हमें, वैज्ञानिक पशुपालन और पोषण से प्रति पशु उत्पादकता बढ़ाने की महत्ती आवश्यकता है। आईये, हम सब मिलकर राज्य के समृद्ध पशुधन की बेहतरी के काम में तन और मन से जुट जाएं। जय हिन्द!

(प्रो. बी.आर. छीपा)

प्रसार शिक्षा निदेशालय के मासिक प्रकाशन 'पशुपालन नए आयाम' के नवीन अंक का विमोचन करते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा

मुख्य समाचार

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी का पशुचिकित्सा महाविद्यालय, जयपुर में भ्रमण

कृषि एवं पशुपालन मंत्री डॉ. प्रभु लाल सैनी एवं पशुपालन विभाग के शासन सचिव श्री अजिताभ शर्मा ने 13 जुलाई को स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर का भ्रमण किया। डॉ. सैनी ने संस्थान के आधारभूत ढांचे और सुविधाओं का निरीक्षण किया। इस अवसर पर पशुपालन मंत्री श्री सैनी ने कहा कि राज्य में यह पशुचिकित्सा के क्षेत्र में एक उच्च शिक्षण संस्थान के रूप में विकसित हुआ है। उन्होंने संस्थान के विभिन्न विभागों का अवलोकन किया तथा छात्रों एवं संकाय सदस्यों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में उन्नत उपकरणों एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था के लिए सहायता देने को राज्य सरकार तैयार है। संस्थान के अधिष्ठाता प्रो. विष्णु शर्मा ने गणमान्य अतिथियों को संस्थान की जानकारी दी।

कुलपति प्रो. छीपा ने किया पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर का निरीक्षण

पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में 3 जुलाई को राजुवास के कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा का अभिनन्दन किया गया। कुलपति प्रो. छीपा ने संस्थान के विभिन्न विभागों तथा इकाईयों का निरीक्षण कर प्रगति का जायजा लिया। उन्होंने शैक्षणिक कर्मचारियों के साथ बैठक की। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. विष्णु शर्मा ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया। कुलपति ने संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा इनको और अधिक प्रभावी बनाने के लिये दिशा–निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान के विकास में उसके कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। उन्होंने सभी संकाय सदस्यों से इस संस्थान को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में भागीदार बनने का आह्वान किया।

जैविक पशुपालन पर 70 किसानों को प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय में जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र द्वारा "जैविक पशुपालन की तकनीक इसके लाभ तथा पश्चिमी राजस्थान में इसका महत्व" विषय पर प्रशिक्षण शिविर 12–13 जुलाई को आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक, डॉ. राजकुमार बेरवाल ने कहा कि इस समय में लोग विभिन्न तरह की बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं, हमें जैविक पशुपालन की तकनीक को तथा मानव समाज को जैविक पशुपालन से होने वाले लाभों से जागरूक करते हुए जैविक पशुपालन को अपनाना पड़ेगा। शिविर में प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिये गए। केन्द्र के सह अन्वेषक डॉ. विजय कुमार ने कहा कि बीकानेर में इस केन्द्र द्वारा जैविक पशुपालन व उसके उत्पाद तकनीक पर कार्य किया जा रहा है। शिविर के समापन पर पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, प्रो. एस.सी. गोस्वामी एवं वित्त नियंत्रक श्री अरविन्द कुमार बिश्नोई ने श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व सीकर जिलों से आये 70 किसानों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। प्रो. बसंत बैस ने किसानों का आभार जताया।

प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी. चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

वी.यू.टी.आर.सी., चूरू द्वारा 1, 11, 18, 19, 22, 26 एवं 29 जुलाई को गांव डूंगरसिंहपुरा, ढ़ढालेखु, उदासर, खंडवापटा, घुमांदा, दाउदसर एवं आसलखेड़ी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 224 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 10, 13, 17 एवं 21 जुलाई को गांव देलदर, खडात, नादिया, धनारी एवं ठण्डीबेरी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., लाड़नू द्वारा आयोजित 5, 6, 13, 14, 15, 17, 18, 19, एवं 20 जुलाई को गांव बरागना, डिकावा, बेगसर, जेतपुरा, कुडली, निम्बीकलां, निम्बीखुर्द, दोलतपुरा एवं दुजार गांवों में व 21 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 225 पशुपालकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 457 पशुपालक प्रशिक्षित

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा आयोजित 7, 13, 14, 15, 17, 22, 24, एवं 25 जुलाई को गांव सांवतसर, खाटसजवार, ठेठार, भगवानगढ़, पदमपुरा, मयावली, सरदारपुरा बीका एवं 18 बीबी पदमपुर गांवों में तथा 5, 11–12, व 20–21 जुलाई को एक तथा दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 457 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर द्वारा 5, 7, 17, 24 एवं 27 जुलाई को गांव दोराई, सूरजपुरा, चांदमा, लामगरा तथा अजगरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 144 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर में 388 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 13, 15, 17, 19, 20, 22, 24 एवं 25 जुलाई को गांव भुवाली, शिशोद, वाडा कुंडली, गडा–कुम्हारिया, पिंडावल, पूनाली, सकानी तथा धताना गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 388 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 5, 7, 14, 15, 18, 20 एवं 22 जुलाई को गांव हिंगोटा, नाम, पहरसल, खानपुर, मेहमदपुरा, वीरमपुरा, खन्डेवला एवं जगजीवनपुर तथा दिनांक 11 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 22 महिला पशुपालकों सहित कुल 167 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा 6, 7, 12, 13, 14, 15, 18, 22, 24 एवं 27 जुलाई को गांव फतेहपुर, ढ़ोटी, छेडली तवरान, चारनहेडी, झाड़गांव, बच्छीहेडा, गुमानपुरा, चोकी, गावड़ी एवं खजुरी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 288 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 6, 12, 18, 19 एवं 21 जुलाई को गांव ढाणीलक्ष्मीनारायण, 2 डीएलडी रोझा, कालू, सेहजरासर, कुजटी एवं खारी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का तथा दिनांक 14–15 एवं 28–29 जुलाई को दो दिवसीय पशुपालक आयोजन किया गया। इन शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

वी.यू.टी.आर.सी., टोंक द्वारा 7, 10, 11, 12, 21 एवं 22 जुलाई को गांव लवादर, गुलाबपुरा, ताखोली, रघुनाथपुरा, खिडगी एवं भैंरूपुरा तथा दिनांक 25 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 189 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 383 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 6, 7, 10, 11, 14, 15, 18, एवं 22 जुलाई को गांव लेसवा, मोखमपुरा, सुरपुर, रामथली, ननाना, फलवा, बाडोली घाटा एवं खेरी गांवों में तथा दिनांक 17 एवं 25 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 383 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा 497 पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा 4, 5, 10, 12, 13, 15, 17, 19 एवं 25 जुलाई को गांव सोना का पुरा, बीलपुर, दुर्गपुरा, लघुपुरा, नन्दपुरा, जारौली, भवानीशकर पुरा, सिघौका एवं जयेस गांवों में तथा दिनांक 22 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 497 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 6, 7, 15, 18, 20, 22, 24 एवं 27 जुलाई को गांव चारणवासी, मन्दरपुरा, लाखनवास, मलवाणी, डुमासर, भनाई, गोगामेडी एवं गुड़िया गांवो में एक दिवसीय कृषक – पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया। इन शिविर में 229 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

उन्नत मुर्गीपालन हेतु आदर्श बिछावन (लीटर) कैसे तैयार करें ?

मुर्गीपालन एक आदर्श एवं बहुत जल्दी मुनाफा देने वाला व्यवसाय है लेकिन मुर्गीपालन में वातावरण के कारकों जैसे तापमान, नमी एवं ठंडी हवा आदि का उत्पादन स्तर पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है। अतः मुर्गीपालन से जुड़े किसानों को छोटी–छोटी बातों का ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है। मुर्गीपालन में मुर्गियों को तीन तरीकों से रखा जा सकता है– पहला बंद मुर्गीशाला में फर्श पर, दूसरा पिंजरों में और तीसरा घर के बाहर या पिछवाड़े खुली जगह में।

लीटर या बिछावन :– मुर्गियों को मुर्गीशाला में रखने के लिए विभिन्न चीजों का उपयोग करके जो फर्श या चादर तैयार की जाती है उसे ही लीटर या बिछावन कहते हैं। मुर्गीशाला बिछावन वास्तव में कुछ कार्बनिक पदार्थ जैसे मूंगफली के छिलके, भूसा, सूखी घास, कागज की कतरन, गत्ते के टुकडे, लकड़ी का बुरादा, पेडों की सूखी पत्तियों के मिलने से बनता है। बिछावन बनने में लगभग दो महीनों का समय लगता है और पूरी तरह बिछावन तैयार होने में 6 माह का समय लगता है। बिछावन पर एक मुर्गी को 4–5 वर्ग फीट क्षेत्र मिलना चाहिए।

अच्छी बिछावन के लाभ :–

- एक अच्छी बिछावन मुर्गियों को सीधे फर्श के संपर्क में आने से रोकती है। इससे मुर्गियों के बीमार होने की संभावना कम हो जाती है।
- बिछावन मुर्गियों के नरम, बैठने एवं चलने में आरामदायक है एवं ठंड के समय शरीर को गर्मी का अहसास कराती है।
- बिछावन में काम आने वाले पदार्थों के साथ मुर्गी की बीठें मिल जाती हैं इससे फर्श सूखा रहता है एवं बार –बार सफाई नहीं करनी पड़ती।
- बिछावन में मुर्गियों की बीठें सम्मिलित होती रहती हैं जिन्हें कुछ जीवाणु सूक्ष्म क्रिया करके छोटे छोटे कणों में तोड़ते रहते हैं। इससे बिछावन में फॉस्फोरस, मैग्निशियम, सोडियम एवं कैल्शियम आदि लवणों का समावेश होता रहता है।

आदर्श बिछावन के गुण :–

- एक आदर्श बिछावन 3 से 5 इंच मोटी होनी चाहिए। सर्दियों के मौसम में बिछावन की मोटाई 10–12 इंच तक अच्छी रहती है।
- अच्छी बिछावन सूखी होनी चाहिए। इसमें नमी की मात्रा शुरूआत में 12% एवं बाद में 30% तक हो सकती है। नमी की मात्रा 30% से ऊपर नहीं होनी चाहिए एवं बिछावन में गीलापन नहीं रहना चाहिए।
- बिछावन में तुरन्त नमी सोखने के गुण होने चाहिए।

मुर्गीशाला में बिछावन कैसे तैयार करें:–

- सामान्यतः मुर्गीपालन कच्चे फर्श पर भी किया जा सकता है लेकिन बिछावन को बार–बार बदलने एवं उसे जीवाणु मुक्त रखने के लिए पक्का फर्श उपयुक्त रहता है।
- बिछावन से पहले मुर्गीशाला की दीवारों एवं फर्श पर बनी दरारों एवं छिद्रों को भर देना चाहिए ताकि उनमें किसी भी प्रकार की नमी न रहे एवं जीवाणु न पनप सकें।
- बिछावन हेतु लकड़ी का बुरादा, मूंगफली का छिलका, गत्ते या पेपर की कतरन, गेहूँ या चावल का भूसा आदि को उपयोग में ला सकते है।
- आरम्भ में बिछावन की मोटाई 3–5 इंच रखें और उसे एक समान फैलाएं। हर पंद्रह दिन बाद बिछावन की परत को पलटना चाहिए।
- दिन के समय बिछावन को थोड़ा समतल करते रहना चाहिए ताकि उसमें नमी इकट्ठी न हो सके।
- बिछावन में लकड़ी का बुरादा एवं खाद स्तर का सुपर फॉस्फेट 4:1 के अनुपात में मिलाकर 10 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 5 कि.ग्रा. बिछा सकते है। इससे बिछवान से निकलने वाली अमोनिया गैस को रोका या कम किया जा सकता है।

बिछावन में उपयोग आने वाले वस्तुओं के गुणः–

- बिछावन में काम आने वाली वस्तुओं में मुर्गियों की बीठों में नमी को सोखने का गुण होना चाहिए।
- बिछावन में तुरन्त सूखने का गुण होना चाहिए।
- बिछावन में कवक, ई.कोलाई, कोक्सिडीया एवं सालमोनेला आदि जीवाणु नहीं पनपने चाहिए।
- बिछावन में किसी भी प्रकार का विषैला एवं एलर्जिक पदार्थ नहीं हो।
- बिछावन में कोई भी नुकीली, धारदार एवं चुभने वाली वस्तुएं नहीं हो।
- बिछावन में प्रयोग आने वाली वस्तुएं, सस्ती, भार में हल्की एवं बाजार में आसानी से उपलब्ध होने वाली होनी चाहिए।
- बिछावन सर्दियों के मौसम में चूजों एवं मुर्गियों को उचित तापमान या ऊष्मा प्रदान करने वाली होनी चाहिए।
- बिछावन में काम आने वाली वस्तुएं जल्दी से अपघटित (बायोडिग्रेडेबल) होने वाली होनी चाहिए ताकि वातावरण में किसी भी प्रकार का प्रदूषण न फैले।

बिछावन के अनुपयोगी होने के कारण :–

- बिछावन पर अधिक संख्या में मुर्गियों को रखना।
- बरसात का पानी बिछावन पर आ जाना।
- मुर्गीशाला में रखे पानी पीने के बर्तन या नल से टपकता पानी बिछावन पर फैलना।
- मुर्गीशाला का वायु अकूलन नहीं होना।
- मुर्गियों द्वारा बीमारियों की वजह से अधिक एवं पतली बीठें करना।
- बिछावन को समय–समय पर नहीं बदलना या समतल नहीं करना।
- अधिक नमी के कारण बिछावन में फफूंद अथवा हानिकारक जीवाणुओं का पनपना।
- अमोनिया की अधिकता के कारण बिछावन से तीक्ष्ण गंध आना।

बिछावन को कब बदला जायेः–

- बिछावन के ऊपर की परत को सप्ताह में एक बार हल्का हिलाना एवं समतल करते रहना चाहिए।
- बिछावन में गीलापन एवं नमी अधिक होने की अवस्था में उसमें ढेले (डले) बनने लगते हैं, ऐसी अवस्था में बिछावन को बदल देना चाहिए।
- बिछावन को कवक, सूक्ष्म जीवाणु अधिक पनप जाने की स्थिति में बदल देना चाहिए।
- बिछावन की मिट्टी को मुट्ठी में लेकर लड्डू बनायें और यदि मुट्ठी खोलने पर लड्डू नहीं टूटता है तो बिछावन को बदल देना चाहिए।
- वर्ष में एक बार पुरानी बिछावन को पूर्ण रूप से हटा कर नयी बिछावन बिछानी चाहिए।

डॉ. देवीसिंह राजपूत (मो. 9410143303),
डॉ. नीरज शर्मा, डॉ. पंकज मिश्रा,
पशु प्रसार शिक्षा विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं में सर्पदंश : प्रबंधन और उपचार

पशु प्रबंधन में सर्पदंश एक आम और महत्वपूर्ण समस्या है। लगभग 70% सर्पदंश की घटनाएँ गैर जहरीले सांपों द्वारा होती है, और जहरीले सांपों के काटने से भी प्राण घातक घटनाएं लगभग 50% ही होती हैं। पूरे विश्व में सांपों की लगभग 3500 से अधिक प्रजातियां पाई जाती है जिनमें से केवल 400 प्रजातिया ही जहरीली होती हैं। जहरीले सांपों में कोबरा, करैत, कोरल, पिट वाईपर, रैटल, कॉपर हेड और समुंदरी करैत मुख्यतः हैं। जहरीले सांपों की पूंछ दबी हुई व चपटी होती है तथा इनके सिर पर शल्क पाये जाते हैं। इनमें पशु के शरीर में जहर छोड़ने के लिए मुख्यतः दो फैंगस दांत पाये जाते हैं तथा दो विष ग्रंथि पायी जाती है। जबकि गैर जहरीले/अविषाक्त सांपों की पूंछ ज्यादा दबी हुई नहीं होती है और इनकी बैली पर तिरछी प्लेटें स्थित होती हैं और बहुत अधिक छोटे दंत पाये जाते हैं। इनके कांटने पर अर्द्धचंद्राकार दंत के निशान पशु के शरीर पर मिलते हैं। सर्पदंश की विषाक्तता मुख्यतः प्रभावित जानवर के आकार, सर्प काटने की शरीर पर स्थिति, पशु शरीर में छोड़ी गयी विष की मात्रा, सर्प की प्रजाति आदि पर निर्भर करती है। सर्प विष मुख्यतः दो प्रकार का होता है– कुछ सांपों जैसे कोबरा, करैत आदि का विष तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सम्बधित मांसपेशियों की कार्य क्षमता को नष्ट कर देता है जिसके कारण पशुओं में पक्षाघात होता है। जबकि रसैल, रैटल, कोपरहेड सांपों का विष स्थानीय ऊतकों को नष्ट करता है एवं रूधिर नलिकाओं को नुकशान पहुंचाने के साथ–साथ रक्त कोशिकाओं को प्रभावित कर रक्त के थक्का जमने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। इस तरह ये हृदय एवं फेफडों की कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं। पशुओं में संर्पदंश की विषाक्तता के मुख्य लक्षणों में तेज दर्द, छटपटाहट, लंगड़ापन, असंतुलित चाल, ठण्डी त्वचा, आंख की पुतली चौड़ी होना, उल्टी, लार गिरना, दस्त, दम घुटना, हांफना और अंत में 2–4 घण्टों बाद पशु की मृत्यु हो जाती है।

सर्पदंश से ग्रसित पशुओं का प्रबंधन तथा उपचार

- सर्पदंश से ग्रसित पशु को शांत रखना चाहिए क्योंकि पशु के ज्यादा हिलने डुलने से विष का शरीर में फैलने का खतरा बढ़ जाता है। प्रभावित भाग स्थिर रखने के लिए मिट्टी के थैले या लकड़ी की खपच्चियों का प्रयोग कर सकते हैं।
- सर्प के काटने पर कोई रस्सी या कपड़े की पट्टी को प्रभावित स्थान से थोड़ा ऊपर कसकर बांध देना चाहिए परन्तु यह ध्यान रहे की पट्टी को हर 10 मिनट में ढीला कर वापस बांधना है तथा आधे घण्टे से ज्यादा देर तक नहीं बांधे रखना है।
- सर्पदंश वाले स्थान पर चीरा लगाकर विष बाहर निकालना भी लाभकारी होता है।
- यदि हमें यह ज्ञात हो कि किस प्रजाति के सर्प ने पशु को काटा है तो मोनोवैलन्ट एंटीवेनम अन्यथा पोलीवैलन्ट एंटीवेनम का अंतःशिरा इंजेक्शन लगाना चाहिए।
- एलर्जी को कम करने हेतु कोर्टिकोस्टीरॉइड देना चाहिए। दर्द निवारक दवाईयों का प्रयोग दर्द को कम करता है। बोर्ड स्पेक्ट्रम प्रतिजैविक दवाइयों का प्रयोग घाव के भरने तक करना चाहिए।
- रिंगर लेक्टेट का घोल भी पशु शोक प्रबंधन में लाभकारी होता है।

डॉ. लक्ष्मीनारायण सांखला (मो. 9460067057),
डॉ. ललित कुमार, डॉ. लक्ष्मीकांत,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

वर्षा ऋतु में पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल कैसे करें

अगस्त माह में राज्य के लगभग हर हिस्से में वर्षा प्रारम्भ हो चुकी है। इस माह कच्चे चारे की पर्याप्त उपलब्धता होने के कारण पशु आवश्यकता से अधिक खा लेते हैं जिससे उनमें अपच, कब्ज, आफरा तथा दस्त की शिकायत हो सकती है और भेड़ बकरियों में फड़किया रोग बहुतायत से होता है। गड्डे–पोखर का पानी एवं इसके आसपास उगा चारा सामान्यतः कृमि अथवा जीवाणुओं से संक्रमित होने से कई प्रकार के आन्त्ररोगों का कारण हो सकते हैं। इस समय कीट–पंतगें, मक्खी–मच्छर भी अत्याधिक मात्रा में पनपते हैं जो कि पशुओं में बहुत सारी बीमारियां (मुख्य रूप से विषाणु एवं रक्त परजीवी जनित) फैलाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। ज्यादा बरसात में भीगने से पशुओं में न्यूमोनिया की शिकायत होने की सम्भावना रहती है।

अतः पशुपालकों को इस माह कुछ बातों पर ध्यान देकर पशु के स्वास्थ्य की देखभाल करनी चाहिए जैसे हरे चारे को सीमित मात्रा में तथा सूखी तूड़ी इत्यादि के साथ देना ही लाभकारी रहता है। भेड़–बकरियों को सीमित मात्रा में ही खेतों में चरने दें। पशुओं को संक्रमित चारा चरने से रोकना चाहिये और इस समय अन्तः परजीवियों से बचाव के लिए कृमिनाशक दवा पशु चिकित्सक की देखरेख में देनी चाहिये। पशु बाड़े के आस–पास गन्दा पानी एकत्र ना होने दें ताकि मच्छर, कीट इत्यादि को पनपने व फैलने से बचाया जा सके। कीट–पतंगों से बचाव के लिए पशु घर व बाड़े में धुएं का प्रयोग न करें अन्यथा पशुओं को श्वांस की बीमारी होने की संभावना रहती है। इस मौसम में पशु शरीर पर किसी भी प्रकार के घाव की देखभाल सही तरीके से करें अन्यथा घाव में मक्खी बैठकर अण्डे देती है और घाव में कीड़े पनप जाते हैं। घाव को अच्छी प्रकार से लाल दवा से धोकर, एंटीबायोटिक मलहम लगायें। सर्पदंश से इन दिनों काफी पशुओं की मृत्यु होती है। अतः पशुबाड़े के आस–पास गन्दगी व सर्प के छिपने के स्थानों पर निगरानी रखनी चाहिये ताकि सर्पदंश से पशुओं को बचाया जा सके।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

टीकाकरण एवं जैविक उत्पाद अनुसंधान केन्द्र

वेटरनरी विश्वविद्यालय में टीकाकरण और जैविक उत्पाद अनुसंधान केन्द्र की स्थापना वर्ष 2015 में की गई है। यह केन्द्र राज्य मद योजना में शुरू किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य पशु चिकित्सा, जैविक जीवाणुओं की कल्चर और टीकाकरण की अत्याधुनिक तकनीक को विकसित कर प्रतिरोधक क्षमता का विकास कर अनुसंधान को आगे बढाना है। गुणवतापूर्ण टीकों का निर्माण और कार्मिकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता भी इसके उद्देश्यों में शामिल है। इस केन्द्र के विषद उद्देश्यों में टीकों की गुणवता को बनाए रखना, अत्याधुनिक और प्रतिरोधक क्षमता के अनुकूल जीवाणुओं द्वारा नये टीकों का विकास करना, जीवाणु जनित बीमारियों से पीड़ित पशुओं को राहत देने की तकनीकों को इजाद करना है। इस क्षेत्र में मानव संसाधनों का विकास करने के साथ ही यह केन्द्र टीका उत्पादन और उनके अनुप्रयोगों की रीति–नीति, संचार और उपयोगिता को लेकर भी कार्य करता है। केन्द्र के वैज्ञानिक, पशुओं और मनुष्यों में होने वाली सामान्य जीवाणु जनित बीमारियों में नियंत्रण के लिए जैविक जीवाणुओं का अध्ययन कर रहे हैं और निरतंर प्रयासरत हैं कि सस्ते और सुरक्षित टीकों का विकास किया जाए। यह केन्द्र टीकों को सरल तरीके से अंगीकार करने की तकनीकों का भी विकास कर रहा है। केन्द्र की प्रयोगशाला में आधुनिकतम आर. टी. पीसीआर उपकरण स्थापित किया गया है। यहां बायो–सैप्टिक केबिनेट भी उपलब्ध है। वर्तमान में इस प्रयोगशाला में बीएसएल–III भी विकसित की जा रही है। जिसके माध्यम से घातक बीमारी के जीवाणुओं पर भी अनुसंधान और शोध को आगे बढ़ाया जा सकेगा। शुद्ध जीवाणुओं को लम्बे समय तक संरक्षित करके रखे जाने की व्यवस्था भी यहां उपलब्ध है। इस केन्द्र के क्रियाकलापों से राज्य में स्वस्थ पशुधन के विकास की नई संभावनाएं बन सकेगी, और पशुओं में महामारियों से होने वाले नुकसान से बचाव के उपायों को लागू किया जा सकेगा।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर
बोवाइन इफिमिरल ज्वर (तीन दिन का बुखार)	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, जयपुर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, चूरू, पाली, सिरोही, सीकर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	भैंस, गौवंश, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, टौंक
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, दौसा टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, अलवर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, धौलपुर, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, पाली, सिरोही
सर्रा	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर, भरतपुर
रक्त परजीवी (थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस)	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, सीकर, भरतपुर
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं पर्ण–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनूं, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, जयपुर, अलवर, सीकर, हनुमानगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी ऊँट वंश को पहचानें

बीकानेरी ऊँट : गौरव प्रदेश का

बीकानेरी ऊंट प्रमुखतया बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूं, सीकर तथा नागौर जिलों में पाया जाता है। साथ ही हरियाणा व पंजाब की सीमान्त क्षेत्रों में भी पाया जाता है। इस नस्ल की उत्पति सिंधी बलूची, अफगान व स्थानीय नस्ल के मिश्रण से मानी जाती है। ऊंट की बीकानेरी नस्ल शुष्क व रेतीले इलाके के लिए अनुकूलित है जहां अत्यधिक गर्मी व अत्यधिक सर्दी पड़ती है। बीकानेरी नस्ल का ऊंट सुडौल, भारी व मजबूत कदकाठी वाला आकर्षक पशु है। इसके शरीर का रंग मुख्यतया गहरा लाल भूरा होता है लेकिन भूरे से काले तक की भिन्नता पाई जाती है। इनके भौंहो, पलकों व कानों पर बालों की अच्छी वृद्धि पाई जाती है जिसे स्थानीय भाषा में झीप्रा कहते हैं। इसका सिर भारी गुम्बद जैसा तथा आंखों के ऊपर गढ्ढे पाए जाते है तथा नाक ऊपर उठी रहती है। यह इसकी मुख्य पहचान है। कान छोटे व खड़े होते हैं। मध्यम मोटी वक्र लिए होती है। जन्म के समय नर व मादा का औसत भार क्रमशः 42 व 40 किलो तथा वयस्क का क्रमशः 531 व 523 किलो होता है। वयस्क नर व मादा की लम्बाई लगभग क्रमशः 164 व 159 सेमी तथा ऊंचाई 201 व 188 सेमी होती है। गर्भकाल लगभग 13 माह तथा दो ब्यांत के मध्य अन्तराल लगभग 24 माह होता है। प्रतिदिन औसतन 4–5 किलो दूध देती है तथा किसी ब्यांत में अधिकतम दूध उत्पादन का औसत 14 किलो है। बीकानेर ऊंट एक बहुउद्शीय नस्ल है, जिसका उपयोग दूध, श्रम, परिवहन, रेशे के लिए किया जाता है। वर्ष में एक ऊंट से लगभग 1 किलो ऊन प्राप्त होती है।

सफलता की कहानी

भैंस व गोपालन से टौंक का जगदीश यादव बना सफल डेयरी व्यवसायी

शास्त्री नगर टोंक निवासी श्री जगदीश यादव एक लघु सीमान्त किसान है जिन्होने कम जमीन होने के बावजूद पशुपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। जगदीश यादव शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित थे, लेकिन पिछले तीस सालों में जगदीश यादव ने पशुपालन पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया तथा सार्थक तरीके से इसे अपनाया। पहले इनके घर में केवल आवश्यकता के अनुसार ही पशुपालन था परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। यादव के पास केवल 15 बीघा जमीन है परन्तु उनका कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं हैं। वर्तमान में जगदीश यादव के पास 30 भैंसे, 25 बछिया एवं बछड़े तथा 20 गायें हैं। गाय–भैंस का दूध बेचकर तथा गोबर विक्रय कर आय अर्जित करते है। जगदीश यादव उन्नत तकनीकों को अपना रहे हैं। वे समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र–टोंक द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु सम्पर्क में रहते हैं। प्रशिक्षण से यादव को काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, दुग्ध उत्पादन में वृद्वि, सन्तुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की। जगदीश यादव पशुपालन की नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालकों को भी बताते हैं। वर्तमान में पशुओं व पशु शाला की देखरेख के लिए गांव के अन्य 6 लोगों को भी रोजगार उपलब्ध करवा रखा है। जगदीश यादव प्रतिदिन गाय–भैंस से 3 क्विटंल दूध उत्पादन करते हैं। इनकी 2 भैंसों से की गई शुरूआत आज एक बड़ी डेयरी के रूप में विकसित हो गई है। जगदीश यादव अपना सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र–टोंक को देते हैं।

सम्पर्कः– जगदीश यादव, टौंक (मो. : 9414334294)

निदेशक की कलम से...

उन्नत पशु आवास का निर्माण अधिक उत्पादन के लिए जरूरी

प्रिय किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों!

अधिक दूध उत्पादन के लिए पशुओं को एक आरामदायक आवास की आवश्यकता होती है। पशुओं के परिपूर्ण प्रबंधन के लिए एक सुनियोजित पशुशाला का निर्माण किया जाना चाहिए। गलत तरीके से बनाये गये आवास में उत्पादन लागत बढ़ने के बावजूद भी दूध उत्पादन कम हो जाता है। बरसात के मौसम में पशु आवास की साफ–सफाई, मल–मूत्र की उचित निकासी का प्रबंध, हवा व रोशनी का समुचित व्यवस्था किया जाना बेहद जरूरी होता है। इस मौसम में साफ–सफाई के अभाव में परजीवी जीवाणु के संक्रमण का खतरा निरंतर बना रहता है। अतः इस ओर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए। पशु आवास की स्थिति ऊंचे उठे हुए स्थान पर होनी चाहिए। ताकि वर्षा के पानी व मल–मूत्र की निकासी आसानी से हो सके और पशुशाला सूखी रहे। इस आवास में प्रचुर धूप के लिए पूर्वमुखी अर्थात लम्बाई में उत्तर–दक्षिण दिशा में स्थित होना चाहिए। पशु डेयरी आवास के निर्माण के लिए पार्श्व दीवारों की ऊंचाई 1. 7–2 मीटर होनी चाहिए। इसकी छत का निर्माण एस्बेस्टस की चादर या टाईल्स से किया जाना चाहिए तथा सर्दी–गर्मी से बचाव के लिए कुचालक पदार्थ का उपयोग होना चाहिए। पशुओं के गोबर और मल–मूत्र के उचित निस्तारण के लिए खाद का गड्ढा बनाना उपयुक्त रहता है। गोबर को गड्ढे में डालकर इसे गला–सड़ाकर खाद बना लेनी चाहिए। पशु स्वास्थ्य के उद्देश्य से गोबर का गड्ढा, कुएं, पानी का तालाब, दुग्धशाला, घर व दफ्तर से दूर बनाना चाहिए। गोबर से वर्मीकम्पोस्ट तथा फार्म के कचरे से कम्पोस्ट खाद भी तैयार की जा सकती है। भाइयों! उत्तम और उन्नत आवास से ही एक निरोगी और उत्पादक पशु की उम्मीद की जा सकती है। **–प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414283388**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अगस्त, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. बी.आर.छीपा** 9414820562 कुलपति, राजुवास, बीकानेर	समन्वित कृषि और पशुपालन है लाभकारी	03.08.2017
2	**डॉ. चन्द्रशेखर सारस्वत** 9983916555 पशुरोग एवं पशु प्रसूति विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	देशी गायों में भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक का उपयोग एवं इसके लाभ	10.08.2017
3	**डॉ. नजीर मोहम्मद** 8432117112 पशु औषध विभाग, सी.वी.एस.एस., बीकानेर	दुधारू पशुओं में मेटाबोलिक (उपापचय) रोगों की पहचान एवं प्रबंधन	17.08.2017
4	**डॉ. नीरज शर्मा** 7023556259 पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, सी.वी.एस.एस., बीकानेर	पशुपालन के क्षेत्र में उद्यमिता की संभावनाएं	24.08.2017
5	**प्रो. बी.एन. श्रृंगी** 9571894341 माइक्रोबायोलोजी, सी.वी.एस.एस., बीकानेर	पशुओं से मनुष्य में होने वाले रोग व उनकी रोकथाम	31.08.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख / विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया